पितृ श्राद्ध में कौवों का बहिष्कार

कु. ऋतु पुत्री श्री हरिदास
बी.ए. तृतीय वर्ष
रूड़की

प्राचीन काल से आज तक हिन्दू अपने-अपने रीति-रिवाज के अनुसार पितृ श्राद्ध करते हैं । कुछ हिन्दू श्राद्ध का महीना शुरू होते ही अपने केश एवं दाढ़ी तक छोड़ देते हैं और जिस दिन तिथि अनुसार अपने परिजनों का श्राद्ध करते हैं , उसी दिन किसी पवित्र स्थान व गंगा घाट पर बाल आदी बनवाकर पिंड दान करते हैं ताकि उनके परिजनों की आत्मा को शांति मिले और उसी दिन ब्राहमणों को भोजन दान आदि करते हैं । कुछ लोग तो कौवों को अपने पित्रों के रूप में मानते हैं और पितृ विसर्जन के बाद कौवों एवं ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं । वह समझते हैं कि हमारे परिजनों की आत्मा कौवों के रूप में आती है । इसी कारण वह कौवों को चावल, आटे की गोली आदि का भोजन खिलाते हैं । परन्तु आज के इस युग में इतना परिवर्तन हो गया है कि श्राद में कौवे नजर ही नहीं आते हैं क्योंकि कौवे आज की इन्सानी की फितरत को समझ गये हैं । अब वे मृतकों की आत्मा ढोने को तैयार नहीं है । मनुष्य तो अपने लिए काजू, बादाम की खीर बनाते हैं और कौवों के लिए अधपकी खीर हाँडी में बनाकर पीपल के पेड़ पर टाँग दी जाती है । इसी कारण कौवों की बिरादरी ने पितृ पक्ष के बहिष्कार का फैसला किया है । यही वजह है कि आजकल कौवे श्राद्धों में नजर नहीं आते हैं ।

****